जीने का आधार 1% या 99% ...!!!

एक प्रोफेसर अपनी क्लास में आते ही बोले:- 'चलिए, आज आप सभी का सरप्राइज़ टेस्ट हो जाए!'

सुनते ही घबराहट फैल गई स्टूडेंट्स में! कुछ किताबों के पन्ने पलटने लगे तो कुछ लगे पढ़ने सर के दिए नोट्स। 'ये सब कुछ काम नहीं आएगा। - प्रोफेसर साहब मुस्कुराते हुए बोले। क्वेश्चन पेपर.....रख रहा हूँ आपके सामने, जब सारे पेपर बट जाएं तभी आप उसे पलट कर देखें।'

बांट दिए गए पेपर्स सभी स्टूडेंट्स को। 'ठीक है! अब आप पेपर देख सकते हैं।' - बोले प्रोफेसर साहब। अगले ही क्षण सभी क्वेश्चन पेपर को निहार रहे थे, लेकिन यह क्या...कोई प्रश्न था ही नहीं उस पेपर में! था तो व्हाइट पेपर पर केवल एक ब्लैक स्पॉट। 'यह क्या सर? इसमें तो क्वेश्चन्स हैं ही नहीं!' एक छात्र खड़ा होकर बोला ।

- ब्र.कु. गंगाधर

'जो भी है आपके सामने है। आपको बस इसी को एक्सप्लेन करना है। लेकिन ध्यान रहे, इसके लिए आपके पास केवल 10 मिनट ही हैं। और आपका वक्त शुरू होता है अब...।' चुटकी बजाते मुस्कुराते हुए बोले प्रोफेसर।

कोई चारा न था उन हैरान स्टूडेंट्स के पास। वे जुट गए उस अजीब से प्रश्न का उत्तर लिखने में। 10 मिनट बीतते ही प्रोफेसर साहब ने फिर से बजाई चुटकी। टाईम खत्म हुआ। और लगे आन्सर शीट्स इकट्ठा करने। स्टूडेंट्स अभी भी हैरान परेशान। प्रोफेसर साहब ने सभी आन्सर शीट्स चेक की। सभी ने ब्लैक स्पॉट को अपनी तरह से समझाने की कोशिश की थी, लेकिन किसी ने भी उस स्पॉट के चारो ओर मौजूद व्हाइट स्पेस के बारे में लिखने की ज़हमत ही नहीं उठाई।

प्रोफ़ेसर साहब गंभीर होते हुए बोले, 'इस टेस्ट का आपके एकाडेमिक्स से कोई लेना-देना नहीं है, ना ही मैं इसके कोई मार्क्स देने वाला हूँ। इस टेस्ट के पीछे मेरा एक ही मकसद है...मैं आपको जीवन की एक अद्‌भुत सच्चाई बताना चाहता हूँ। देखिये! यह पेपर शीट 99% व्हाइट है, ...लेकिन आप में से किसी ने भी इसके बारे में नहीं लिखा और अपना 100% जवाब केवल उस एक चीज़ को एक्सप्लेन करने में लगा दिया जो मात्र 1% है...। यही बात हमारी लाइफ में भी देखने को मिलती है। प्रॉब्लम्स हमारे जीवन का एक छोटा सा हिस्सा होती हैं, लेकिन हम अपना पूरा ध्यान इन्हीं पर लगा देते हैं...। कोई दिन रात अपने 'लुक्स' (बाह्य सुंदरता) को लेकर परेशान रहता है, तो कोई अपने करियर को लेकर चिंता में डूबा रहता है, तो कोई पैसों का रोना रोता रहता है, तो कोई दूसरे की छोटी सी गलती को अपने दिमाग में रखे रखता है। क्यों नहीं हम अपनी ब्लेसिंग्स या प्राप्तियों को गिनकर खुश होते हैं...! क्यों नहीं हम पेट भर खाने के लिए उस सर्व शक्तिवान परमात्मा को थैंक्स कहते हैं...! क्यों नहीं हम अपनी प्यारी सी फैमिली के लिए शुक्रगुज़ार होते हैं...! क्यों नहीं हम लाइफ की उन 99% चीज़ों की तरफ ध्यान देते जो सचमुच हमारे जीवन को अच्छा बनाती हैं...! क्यों नहीं हम अपने मित्रों-सम्बन्धियों की गलतियों को नज़रअंदाज़ कर अपने रिश्ते को टूटने से बचाते हैं...!' स्टूडेंट्स प्रोफेसर साहब की दी गई इस सीख से गद्‌गद् थे।

आइये, आज से ही हम लाइफ की प्रॉब्लम्स को ज़्यादा गम्भीरता से लेना छोडें, मित्रों/सम्बन्धियों की गलतियों को भूलें और जीवन की छोटी-छोटी खुशियों को एन्जॉय करना सीखें। तभी हम ज़िन्दगी को सही मायने में जी पायेंगे...।

हम न्यारे हैं तो उसको प्यार करने के लिए फ्री हैं

ओम शांति शब्द ने ही हरेक को अपना बनाके रखा है। किसकी भी बुद्धि बाहर नहीं जा सकती है। बाबा की हाज़िरी में मुझे भी हाज़िर होना है, यही बुद्धि में रहता है। एक बाबा इतने बच्चों को अपना बनाके फिर कहता है तुम मुस्कराते रहो, कोई मुश्किलाते नहीं। हरेक आत्मा अपने-अपने शरीर में अपना-अपना पार्ट बजा रही है। मैं आत्मा हूँ, मेरा परमात्मा है, यह बात सदा स्मृति में, वृत्ति, दृष्टि में नैचुरल हो। आत्मा कहाँ है? इसी देह और दुनिया में रहते हुए भी एक दो से अलग हैं। दो भी एक जैसे नहीं हैं। कितना अच्छा सहज राजयोग है, राजाई है। राजाई पद पाने के लिए हमने भी भगवान से यह वायदा किया है कि हम राजाई लेके ही छोड़ेंगे।

हमारे बुलावे पर खींचकर वो इस समय पर ऊपर से यहाँ आया है और अभी हमको ऊपर खींच रहा है, जो हमारे कारण ऊपर से आया है। कौन आया... मेरा परदेशी... बहुत ऊँचा उसका नाम है, ऊँचा उसका ठांव है और हम पीछे से जहाँ तू रहता है वहाँ हम आयेंगे। पंछी और परदेशी दोनों किसी के मीत नहीं हैं, हम परदेशी हैं। कौन है जो कहे मैंने माया को एक बारी ऐसी आँख दिखाई है नॉट एलाऊ... तो बिचारी नहीं आती है।

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

हम अपने अचल-अडोल स्थिति के तख्त पर बैठ जायें। तो इस तख्त पर माया आ नहीं सकती है। तो हर एक अपने ऊपर ध्यान दे। अडोल-अचल रहने का जो तख्त मिला है, यह बड़ा अच्छा है। कोई भी देह या देह के सम्बन्धी याद न आयें। भले कहाँ भी हों, पर मेरे पास यह आवाज़ कारणों का, दु:ख का सुनाई पड़ता है। ये इज़ी राजयोग, सहज राजयोग है, थोड़ा सुनाने समझाने के लिए आवाज़ में आना पड़ता है। संगम के समय की यह बड़ी वैल्यूबल लाइफ है, इसमें ही मन मेरे में लगा दो। मनमनाभव, भगवानुवाच, भगवान डायरेक्ट कहे मन मेरे में लगाओ। मुझे सिर्फ टेन्शन फ्री रहना अच्छा लगता है, बाबा ने एक बारी मुझे कहा, टेन्शन के आगे ए लगा दो तो अटेन्शन हो जायेगा। तब से अटेन्शन देकर चल रही हूँ। कहाँ-कहाँ से प्लेन से आते हैं, पर मुझे तो प्लेन बुद्धि लेके आती है। अनुभवी ही जाने इस सुख को। यह समझने के लिए कोई पढ़ा लिखा नहीं चाहिए और ना ही कोई डायरी पेन की ज़रूरत है। ऊपर उड़ने के लिए प्लेन यहाँ खड़ी है। रॉयल पर्सन को प्लेन में जाना नहीं पड़ता है। प्लेन उनके पास आता है, जैसे बाबा कहता है तुम सिर्फ हाँ कहो, मुझे चलना है तो बस, बाबा ले जायेगा।

सुनने के साथ अनुभव भी करो

साकार और अव्यक्त दोनों ही मुरलियों का महत्व तो है ही, लेकिन साकार ब्रह्मा द्वारा जो मुरलियां चली हैं और अभी जो अव्यक्त ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा की मुरलियां चल रही हैं, चलाने वाला तो वही शिवबाबा ही है, चाहे पहले साकार ब्रह्मा द्वारा चलाई, अभी अव्यक्त ब्रह्मा द्वारा चला रहे हैं, माध्यम चाहे कोई भी हो, लेकिन है तो शिवबाबा की ही मुरली। उसमें भी साकार ब्रह्मा द्वारा जो मुरलियां चली हैं उन मुरलियों में फुल नॉलेज है, फुल नॉलेज की हमारी चार सब्जेक्ट है – ज्ञान, योग, धारणा, सेवा। तो साकार ब्रह्मा द्वारा चली हुई मुरलियों में आपको ये चारो ही सब्जेक्ट मिलेंगे। ज्ञान की प्वाइंट्स भी मिलेंगी, योग के बारे में भी बाबा हर मुरली में कुछ न कुछ ज़रूर समझाते हैं। धारणा की भी बात होती है और सेवा की विधि भी सुनाते हैं। चारो ही सब्जेक्ट कवर करते हैं। बाबा ने ज्ञान की जो प्वाइंट्स दी हैं वो अमूल्य रत्न हैं। तो जो साकार ब्रह्मा बाबा द्वारा मुरलियां चली हैं उसका महत्व ही यह है कि एक मुरली में आपको चार सब्जेक्ट मिलेंगे। वेराइटी मिलेगी। साकार मुरली सुनने में बहुत मज़ा आता है। मुरली सुनने के टाइम आप यह लक्ष्य रखो कि जो प्वाइंट बाबा सुना रहा है, मानो बाबा ने ज्ञान की प्वाइंट शुरू की, ज्ञान की प्वाइंट सुनाते-सुनाते बाबा धारणा की प्वाइंट में चले जाते हैं, फिर धारणा के प्वाइंट के बाद सेवा के प्लैन में चले जाते हैं। तो जैसे एक ही टाइम हम चक्कर लगा रहे हैं। तो हमारे को मुरली सुनने की विधि आनी चाहिए। सिर्फ प्वाइंट्स सुन रहे हैं, यह नहीं। लेकिन वास्तव में मुरली सुनने की जो विधि है उसी प्रमाण सुनो। बाबा के एक-एक बोल को सुनते उसमें अपनी बुद्धि को बिज़ी कर दो, अनुभव करते जाओ। मानो बाबा स्वर्ग की स्मृति दिला रहा है तो हम सुनते हैं। हम स्वर्ग में थे तो कैसे थे, ये अनुभूति हमें हो। वहाँ हमारे संस्कार कैसे थे, हम कैसे रुहाब में थे, ये हमें अनुभव करते जाना है। जैसे आज टेप रिकॉर्ड में भी गीत भरा हुआ होता है तो हम जो भी लाइन सुनना चाहते हैं, सुन सकते हैं। तो हमारी आत्मा का टेपरिकॉर्ड जो है, उसमें आप जो बजाना चाहो वह बज सकता है ना! इसीलिए जिस समय बाबा कोई ज्ञान की बात सुनाते हैं उस समय सिर्फ सुनो नहीं, वहाँ पहुँच जाओ अर्थात् उस स्वरूप का अनुभव करो। कभी बाबा कहते हैं परमधाम में शिवबाबा के साथ तुम आत्माएं निराकार थी, बिन्दू थी तो परमधाम पहुँच जाओ। बाबा कह रहा है परमधाम और आप वहाँ अनुभव कर रहे हो। आत्मा परमधाम में एकदम बिन्दू स्टार मुआफिक थी, सूक्ष्म थी तो हो जाओ सूक्ष्म, अनुभव करो आत्मा का। उसी तरह बाबा कहते, स्वदर्शन चक्र फिराओ, तो हम इस पूरे कल्प में कैसे थे और बदलते गये, तो इसका अनुभव करते चलो।

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

परमात्म ज्ञान से राइट-रॉन्ग की समझ

यह बेहद की युनिवर्सिटी है, जिस युनिवर्सिटी में पढ़ाने वाला प्रोफेसर सुप्रीम टीचर परमात्मा है। भले ये प्यारे सुप्रीम फादर का घर भी है, परन्तु साथ-साथ युनिवर्सिटी भी है। तो आप सभी इस समय गॉडली स्टूडेंट बन कर सुप्रीम टीचर द्वारा नई ज्ञान-योग की पढ़ाई पढ़ रहे हो। इस पढ़ाई से लाईफ के लिए सच्ची राह मिल जाती है। जिस राह से रूह को राहत मिलती है। ये नॉलेज हमें राइट और रॉन्ग की बुद्धि देती है। दिव्य बुद्धि अर्थात् जो राइट और रॉन्ग की जजमेंट करे। आज मनुष्य की बुद्धि राइट और रॉन्ग की जजमेन्ट करने में असमर्थ है। अपनी-अपनी मत से एक कहेगा ये राइट, दूसरा कहेगा ये राइट.....अपनी-अपनी मत से राइट को रॉन्ग और रॉन्ग को राइट कर देते हैं। लेकिन ये नॉलेज जो वास्तविक सत्य है, उसी सत्यता का फौरन जजमेन्ट देती है। कैसा भी कर्म करते हैं, कैसी भी चाल-चलन कोई चले, राइट-रॉन्ग की जजमेन्ट मिलती है। जैसे हंस खीर और नीर दोनों को अलग कर लेता। रत्न चुग लेता है, कंकड़ छोड़ देता है। तो यह नॉलेज हमको हंस बनाती है। राइट रॉन्ग की यथार्थ पहचान देती है। दृष्टि-वृत्ति में स्वयं को और औरों को फील होता है कि ये जिस दृष्टि से देखता है वह रूहानियत से देखता है, प्रेम से देखता है, सद्भावना से देखता है या इसकी दृष्टि-वृत्ति कैसी है? यदि अपवित्रता की दृष्टि है, तो भी अन्दररियलाइज़ होगा। यदि किसी के लिए नफरत होगी, तो भी उसकी दृष्टि से मालूम हो जाएगा कि ये किस दृष्टि से मुझे देखता है। तो ये नॉलेज वृत्ति को भी रियलाइज़ कराती और कौन किस दृष्टि से देखता उसे भी रियलाइज़ कराती है। हमको नॉलेज मिली है कि तुम आत्मा इस मस्तक पर मणि की तरह चमकती हुई बिन्दू हो। तुम उस मणि अर्थात् बिन्दू को ही देखो और उस बिन्दू में कितने विशेष गुण हैं, कितनी उसमें रुहानियत की शक्ति है, वही देखो। क्योंकि कोई भी बात पहले बुद्धि में आती फिर वृत्ति में चली जाती है। तो वह वृत्ति फिर दृष्टि से काम करेगी। तो यह वृत्ति और दृष्टि दूसरों को कितना प्रेम देती, रिसपेक्ट देती, दूसरों के प्रति कितनी सद्भावना है, यह सब नॉलेज से रियलाइज़ हो जाता है। यदि अन्दर से कुछ और भावना हो और बाहर से दिखावटी भावना हो - तो भी फील होगा। दिल से हम किसको कितना लव देते हैं या कॉमन रूप से लव रखते हैं - इन दोनों का अन्तर यह नॉलेज ही स्पष्ट करती है। इसलिए ये नॉलेज हमको हर एक बात में निर्णय शक्ति देती है। तो आत्मिक स्मृति और परमात्म स्मृति का यही आधार है। क्योंकि बुद्धि के क्लीयर होने से ही स्मृति पावरफुल हो जाती है- ये दो सब्जेक्ट (ज्ञान और योग) जीवन के मूल आधार हैं। जितना-जितना इसकी गहराई में जाते हैं, स्टडी करते हैं, कॉन्शियसनेस में रहते हैं, उतना दैवी गुणों की धारणा होती है, सूक्ष्म संस्कार परिवर्तन होते हैं क्योंकि रियलाइज़ेशन की शक्ति आ जाती है। अत: सबसे पहले यह नॉलेज खुद को बहुत फायदा देती है।

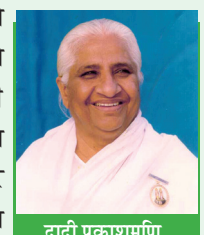
दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका